शक्तिशाली सुनामी -

लेखक: आर.बाबूराज जैन

हे सुनामी !
कहाँ से आई ?
कहाँ चली गई ?
अनगिनत जान साथ ले गई ।
प्रकृति का प्रचंड रूप वाली !
तुम्हारा नाम है अच्छा,
लेकिन काम है बुरा ।
अनपढ़ सारे तुम्हें जान गए ।
तुम्हारे काम से सभी मान गए ।
तुम्हारे भयंकर विकराल रूप से,
धन-संपत्ति तबाह हो गए ।
बाल-बच्चे अनाथ हो गए ।
बच्चे खोकर माँ-बाप अनाथ हो गए ।
रिश्ते-नाते भूत हो गए,
सपने सारे समाप्त हो गए ।

हे सुनामी! मदमत्तवाली !

छोटे रूप में लहर कहलाती,
बड़े रूप में सुनामी बन जाती,
शांत होती तो हितकारी बनती,
विराट रूप में आतंक मचाती ।

हे सुनामी ! यमदूत की रानी !

तुम्हारी शक्ति को सबने पहचानी ।
आतंकवाद से बढ़कर है तू,
उग्रवाद से चढ़कर है तू,
सागर में रहकर ज्वालामुखी है तू,
सचमुच में खतरनाक है तू ।

हे सुनामी ! राक्षस लहरी !

कराहे न सुनकर बन गई बहरी,
चारों ओर लाश ही लाश रह गईं ।
यह घटना इतिहास बन गई ।

हे सुनामी ! प्रभावशाली !

विष्णु- महेश का मिश्रणवाली,
जीवनदायी, जीवननाशी,
शक्तिशाली है सुनामी !